Seventeenth Loksabha

>

Title: Issue pertaining to Sandal wood/oil.

श्री सुब्रत पाठक (कन्नौज): अध्यक्ष जी, धन्यवाद आज आपके माध्यम एक बहुत महत्वपूर्ण मुद्दे पर मैं सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । भारतीय चंदन का दुनिया में सर्वश्रेष्ठ स्थान है । तमाम शायरों और साहित्यकारों ने भारतीय मलयागिर चन्दन की अपनी-अपनी तरह से व्याख्या भी अपने साहित्य ग्रंथों में की है । प्रत्येक वर्ष लगभग तीन हजार मिट्रिक टन चंदन की लकड़ी से तेल निकालने का काम किया जाता है, जिसमें एक मिट्रिक टन लकड़ी से 47 से लेकर 50 किलोग्राम तक चंदन का तेल प्राप्त होता है । बाजार में एक कि.ग्रा. तेल का मूल्य एक लाख रुपये के आसपास है । हमारी सनातन संस्कृति में चन्दन का उपयोग ईश्वर की अराधना में होता है साथ ही आयुर्वेद, कास्मेटिक, इत्र आदि के उपयोग में आने के कारण चन्दन की लकड़ी और तेल की भी दुनिया भर में भारी डिमांड है ।

माननीय अध्यक्ष जी, आज डिमाण्ड के सापेक्ष हम बाजार में उपलब्धता सुनिश्चित नहीं कर पा रहे हैं । जिस चंदन को दुनिया में हमारे ऋषियों, मुनियां ने जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त अंतिम संस्कार में सर्वोच्च स्थान दिया, वहीं आज हमारी नीतियों के कारण हमारे अपने ही बाजार में बाहर से आयात करना पड़ रहा है ।

माननीय अध्यक्ष जी, वर्ष 2000 के पूर्व तो चंदन का पेड़ काटना भी अपराध की श्रेणी में था। कुछ नियमों में शिथिलीकरण जरूर हुआ परन्तु आज भी बहुत जटिलता है । वर्ष 2000 से पहले बड़ी मात्रा में तमिलनाडू सरकार के द्वारा चंदन की लकड़ी का आक्शन किया जाता था, इसमें अपनी जरूरत के हिसाब से वन विभाग से अपने काम के लिए चन्दन की लकड़ी की खरीददारी कर लिया करते थे, किन्तु वन विभाग के द्वारा चन्दन के पेड़ पर रुचि न लेने के कारण से यह विलुप्ति के कगार पर आता जा रहा है । जबकि आस्ट्रलिया ने दुनिया के सबसे

बड़े उत्पादक के रूप में विश्व बाजार में चंदन का निर्यात करने में अपना स्थान मजबूती से बना लिया ।

अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से यह मांग करता हूं कि आज जिस प्रकार से आस्ट्रेलिया ने 13 हजार हेक्टेयर से भी अधिक भारत के चन्दन के पेड़ लगाकर भारत में ही निर्यात कर रहा है, तो हमारे देश में भी इसे बढ़ावा मिलना चाहिए और चन्दन के पेड़ लगाने का काम हमारी भारत सरकार करे, धन्यवाद ।

माननीय अध्यक्ष : श्रीमती मीनाक्षी लेखी को श्री सुब्रत पाठक द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है ।

माननीय सदस्यगण, अब पहली बार चुनकर आने वाले माननीय सदस्य पहली बार सदन में बोलेंगे । मैं उनका नाम पुकार रहा हूं ।

श्रीमती कविता सिंह ।